प्राक्कथन

संस्थान ने लगभग एक दशक पहले से अपनी सभी परीक्षाओं के लिए समर्पित पाठ्यसामग्री तैयार करने की परंपरा अपना रखी है और वह अपनी पुस्तकों एवं पाठ्यसामग्री को अद्यतन बनाए रखने का निरंतर आधार पर प्रयास करता रहता है, ताकि परीक्षाओं में उस विषय को अपनाने वाले अभ्यर्थीगण बैंकिंग एवं वित्त उद्योग से सम्बन्धित अद्यतन जानकारी से लैस हो सकें। पाठ्यसामग्री को अद्यतन करने के अलावा, संस्थान पाठ्यक्रमों को पुनरीक्षित करता रहता है तथा उसे वृत्तिशील बैंकरों की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने के लिए नया रूप भी प्रदान करता है। सीएआईआईबी का संशोधित आरूप पाठ्यक्रम को वृत्तिशील बैंकरों के लिए अधिक प्रासंगिक बनाने की दिशा में संस्थान के प्रयासों का एक उदाहरण है।

सीएआईआईबी का संशोधित आरूप इस तथ्य को रेखांकित करता है कि वर्तमान बैंकिंग के लिए सामान्य और उसके साथ ही प्रभाव-क्षेत्र विशिष्ट जानकारी की आवश्यकता होती है। यह देखने में आता है कि विशेषज्ञता वाले युग में कोई ऐसा अभ्यर्थी, जिसने किसी बैंक में किसी एक क्षेत्र (शीर्ष) के अधीन कुछेक वर्षों तक काम किया है और उस क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल कर रखी है, किसी नये क्षेत्र में उतनी सहजता से काम कर पाने में तब तक समर्थ नहीं हो सकता, जब तक कि उसे उस नये क्षेत्र से सम्बन्धित जानकारी व्यावसायिक रीति से उपलब्ध नहीं करा दी जाती। ऐसे व्यक्तियों को उस नये क्षेत्र की अर्थच्छाया को सीखने के अवसर की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, बैंकिंग के किसी विशिष्ट क्षेत्र में कार्यरत व्यक्ति के लिए वर्तमान घटनाओं की अद्यतन जानकारी रखना आवश्यक होता है, जो कार्य के दबाव को देखते हुए स्वयमेव नहीं प्राप्त हो सकती। भिन्न स्वरूप वाली इन्ही आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमने सीएआईआईबी के नये आरूप को संन्निबद्ध किया है।

नये पाठ्यक्रम में दो अनिवार्य प्रश्नपत्रों यथा - **उन्नत बैंक प्रबन्धन और बैंक वित्तीय प्रबन्धन** की व्यवस्था है। उन्नत बैंक प्रबन्धन से सम्बन्धित प्रश्नपत्र में आर्थिक विश्लेषण, कारोबारी गणित, मानव संसाधन प्रबन्धन एवं ऋण प्रबन्धन का समावेश है। बैंक वित्तीय प्रबन्धन से सम्बन्धित प्रश्नपत्र में अन्तरराष्ट्रीय बैंकिंग, जोखिम प्रबन्धन, खज़ाना प्रबन्धन तथा तुलन पत्र प्रबन्धन शामिल हैं। इस प्रकार दोनों अनिवार्य प्रश्नपत्रों में न केवल वर्तमान सीएआईआईबी के तीनों ही खण्डों का समावेश है, अपितु उनमें आर्थिक विश्लेषण और कारोबारी गणित जैसे वर्तमान समय के बैंकरों के लिए अत्यंत उपयोगी नये क्षेत्र भी शामिल हैं।

जहां तक तीसरे प्रश्नपत्र का सम्बन्ध है, अभ्यर्थियों को कई एक ऐच्छिक (वैकल्पिक) प्रश्नपत्रों में से एक ऐसे प्रश्नपत्र का चयन करने का विकल्प प्राप्त है, जो अब चयनात्मक विषयों के रूप में उपलब्ध होंगे। चयनात्मक विषयों में किसी बैंक में विशिष्टीकृत प्रभाव-क्षेत्रों वाले सम्पूर्ण वर्णक्रम का समावेश होगा। इस समय उपलब्ध कराए जा रहे चयनात्मक विषय हैं मानव संसाधन प्रबन्धन, जोखिम, खज़ाना, खुदरा बैंकिंग, अन्तरराष्ट्रीय बैंकिंग, कारपोरेट बैंकिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, ग्रामीण बैंकिंग, वित्तीय परामर्श (मंत्रणा) एवं केन्द्रीय बैंकिंग।

संस्थान अपनी अधिसंख्य परीक्षाओं के लिए सम्बन्धित विषयों की आवधिक अद्यतन सामग्री प्रकाशित करता रहता है। इन अद्यतन सामग्रियों से संस्थान को पाठ्यसामग्री का तीन वर्ष में एक बार संशोधित रूप प्रकाशित करने में सहायता प्राप्त होती है। वैसे इस पुस्तक/पाठ्यसामग्री और अद्यतन सामग्री को परीक्षा के प्रयोजन हेतु पर्याप्त होना चाहिए। तथापि, परीक्षा की तैयारी करते समय बैंकिंग एवं वित्त को प्रभावित करने वाले सभी क्षेत्रों में परिलक्षित द्रुत परिवर्तनों के कारण पुस्तक को सूचना का एकमात्र स्रोत नहीं माना जाना चाहिए। विद्यार्थियों को दैनिक आर्थिक समाचार पत्रों, लेखों, पुस्तकों तथा सरकारी प्रकाशनों/वेबसाइटों आदि का अध्ययन कर के वर्तमान घटनाओं से अपने आपको अवगत रखना होगा। इसे ध्यान में रखते हुए कुछेक प्रश्न पाठ्यक्रम से सम्बन्धित, किन्तु इस पुस्तक में समाविष्ट न की गई हाल ही की घटनाओं पर आधारित होंगे।

जहां अनिवार्य प्रश्नपत्र बैंकिंग की व्यापकता से परिचित कराते हैं, वहीं चयनात्मक प्रश्नपत्र उसकी गहनता में ले जाते हैं। हमें विश्वास है कि अभ्यर्थीगण सीएआईआईबी के नये पाठ्यक्रम को अपने प्रयोजनों के लिए उपयोगी पाएंगे। इसी प्रकार बैंक यह पाएंगे कि सीएआईआईबी उत्तीर्ण व्यावसायिकों के पास निर्णायक स्तर की जानकारी है।

ये पुस्तकें विद्यार्थियों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और अन्यों सहित बैंकिंग में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए उपयोगी होनी चाहिए। हम इस अवसर पर इस पाठ्यसामग्री की रचना करने वाले उन समस्त विशेषज्ञतापूर्ण संसाधन सम्पन्न व्यक्तियों तथा उन विशेषज्ञों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिन्होंने इसका पुनरीक्षण किया है। उनकी अनन्य सहायता, सम्बद्धता और अध्यवसाय के अभाव में इस प्रयास को इतनी कम समयावधि में सफलता नहीं प्राप्त हो सकती थी।

इन पुस्तकों और उनकी विषय-सामग्री को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

आर. भास्करन

मुंबई
1.7.2012

मुख्य कार्यपालक अधिकारी